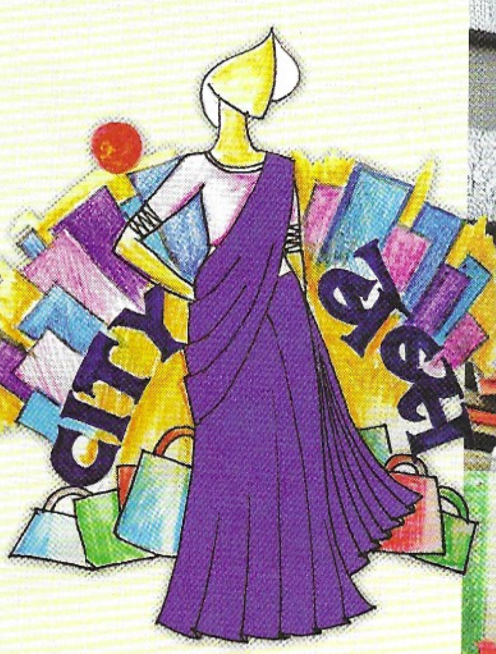

नीयत नेक तो मंजिल दूर नहीं

— अंजलि सिंह

लखनऊ की अंजलि सिंह ने दृढ़ संकल्प से महिलाओं के बेहतरी के लिए जो काम किया है, वह काबिलेतारीफ है—

पर्यावरण का संरक्षण आज के समाज के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। अंधाधुंध भागती इस दुनिया में विकास के जो काम हुए उनके आगे पर्यावरण के लिए की गयी कोशिश काफी नहीं है। लेकिन तरक्की और पर्यावरण की इस खींचतान के बीच समाज में आज भी कुछ लोग हैं, जिन्होंने अपने मजबूत इरादों और नजरिए से उम्मीद की किरण को जलाए रखा है। पर्यावरण बचाने के साथ महिलाओं को आगे बढ़ाना व सशक्तीकरण, ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सबल बनाना तथा मिलजुल कर रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा को बढ़ावा देना—यह सबसे सही परिचय है अंजलि सिंह का। भोपाल में जन्मी और लखनऊ पलीबढ़ी अंजलि सिंह ने अपनी मेहनत, कर्तव्यनिष्ठा से जो मुकाम हासिल किया है वह काबिलेमिसाल है।

इंदिरानगर, लखनऊ स्थित *जूट आर्टिजन गिल्ड एसोसिएशन* की संस्थापक अंजलि सिंह पर्यावरण संरक्षण के लिए लगातार काम कर रही हैं। इनकी संस्था में जूट से बनी अनेक चीजें तैयार की जाती हैं। पर्यावरण के गिरते स्तर को देखते हुए कई राज्यों द्वारा प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया गया है, ऐसे में इस संस्था द्वारा बनाए गए जूट के प्रोडक्ट एक बेहतर विकल्प के रूप में अपनाए जा रहे हैं।

मुश्किल राहें, सकारात्मक दृष्टिकोण

मध्यवर्गीय परिवार में जन्मी अंजलि एयरहोस्टेस बनने का सपना देखती थीं, परंतु कुछ कारणों से इन्होंने एमबीए किया, उसके बाद लखनऊ के ही कुछ संस्थानों में लगभग 8-9 साल तक काम किया। वहां के काम से इन्हें ना तो संतुष्टि मिली और ना ही इन्हें अपनी प्रतिभा निखारने का पूरा मौका मिल पाया। अंतत: उन्होंने नौकरी छोड़ने का निश्चय किया। अब सामने 2 विकल्प थे—या तो घर पर हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाएं या खुद से ही कुछ रचनात्मक करना। उसी समय अंजलि के पिता नौकरी से सेवानिवृत हुए थे। उन्होंने राष्ट्रीय जूट बोर्ड की सहायता से एक एनजीओ आरंभ किया, जिसका उद्देश्य गांव के लोगों को जूट से बनी चीजें बनाने की ट्रेनिंग देना था, जिससे वे इस कुटीर उद्योग के माध्यम से अपनी कला को रोजगार से जोड़ सकें।

गांव की स्त्रियों तथा उनके बच्चों के मुश्किल हालात देख कर अंजलि उनके बारे में सोचने पर

अंजलि का 'जूट आर्टिजंस गिल्ड एसोसिएशन' एक जाना-पहचाना ब्रांड बन चुका है, जिसमें 6 से 7 लाख जूट बैग्स हर वर्ष बनाए जाते हैं।

मजबूर हुईं। यहां अंजलि ने अपने पिता के आदर्शों पर चलने की ठान ली और पिता द्वारा शुरू किए इस सामाजिक और नेक कार्य में अपना भविष्य देखना शुरू किया। यह उनके जीवन का एक संतोषजनक बदलाव था। एक चीनी कहावत 'रोटी देना उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना रोटी कमाने की कला को सिखाना' को अंजलि ने अपनी कार्यशैली बना लिया। उन्होंने ग्रामीण स्त्रियों को अपनी संस्था से जुड़ने के लिए प्रेरित किया, ताकि वे आर्थिक रूप से सक्षम हो सकें।

वे यहीं नहीं रुकीं, इसे मूर्त रूप देने के लिए सोचा और जूट बैग उत्पादन के लिए एक इकाई स्थापित की। इसके बाद उन्होंने गांव की स्त्रियों से संपर्क साध कर इस हुनर को सीखने का हौसला दिया। शुरुआत में सामाजिक, ग्रामीण परिवेश और संकोच की वजह से कोई भी स्त्री अपने घर-परिवार से निकल कर यह नया काम अपना लेने के लिए तैयार नहीं हुई, पर अंजलि ने हार नहीं मानी और कोशिश करती रहीं। कुछ समय बाद बड़ी कठिनाई से एक स्त्री इनकी संस्था से जुड़ी। वर्ष 2009 में इन्होंने जूट बैग्स के कुछ नमूने तैयार किए और इस तरह इनकी 'जूट फॉर लाइफ' की यात्रा शुरू हुई।

प्रतिदिन अंजलि अपनी स्कूटी से लखनऊ शहर के दफ्तरों, कॉलेजों, संस्थानों के चक्कर लगातीं और अपने जूट के नमूने वहां दिखातीं। उन्हें पहला ऑर्डर लखनऊ विश्वविद्यालय से मिला। यह सफलता की पहली सीढ़ी थी। अपनी बचत से उन्होंने जूट बनाने के लिए कुछ विशेष प्रकार की मशीनें खरीदीं। अंजलि की संस्था में सीखने हेतु कुछ और ग्रामीण स्त्रियां शामिल हुईं और इस तरह संस्था आगे बढ़नी लगी।

चुनौतियां भी थीं

अंजलि के प्रयासों और संपर्कों के माध्यम से उत्पादन कुछ और बढ़ा, तो नए ऑर्डर मिलने शुरू हुए। किंतु अभी राहें भी कठिन थीं और मंजिल भी दूर थी। आर्थिक चुनौतियां मुंह बाए खड़ी थीं। संस्था में कार्य करने के लिए जरूरत के मुताबिक कामगार नहीं थे। जो कच्चा माल कोलकाता से आता था उसे मंगाने में कठिनाई आ रही थी।

अंजलि उस समय आर्थिक रूप से उतनी मजबूत नहीं थीं, पर उन्होंने अपने व्यवसाय को रुकने नहीं दिया और उन्होंने अपनी जमापूंजी व्यवसाय में लगा दी। बैंक से लोन लिया, गोल्ड लोन भी लिया। उन पर काफी कर्जा चढ़ गया, किंतु कहावत है ना–'द शो मस्ट गो ऑन' तो व्यवसाय चलना ही था और चलता ही रहा। यात्रा कठिन थी, किंतु हौसले बुलंद थे। गांव की महिलाओं को अपने पैरों पर खड़ा करना अंजलि के जीवन का लक्ष्य बन चुका था।

सफलता की ओर

अब तक अंजलि के कार्य और संस्थान को एक पहचान मिल चुकी थी। गांव की महिलाओं को स्वरोजगार उपलब्ध करने के अपने उद्देश्य को आगे बढ़ाने की दिशा में एनएसआईसी की सहायता से उन्होंने 4 अन्य गांवों में 4 यूनिट और लगायीं और उनके इस प्रयास से लगभग 250 ग्रामीण महिलाओं को रोजगार मिला।

आज अंजलि का *जूट आर्टिजंस गिल्ड एसोसिएशन* एक जाना-पहचाना ब्रांड बन चुका है, जिसमें 6 से 7 लाख जूट बैग्स हर वर्ष बनाए जाते हैं। हाल ही में अंजलि ने नया ब्रांड 'जूट फॉर लाइफ' आरंभ किया है। यहां जूट के बने सामानों का निर्यात जापान और यूरोप जैसे देशों में किया जाता है। जूट आर्टिजन गिल्ड एसोसिएशन तथा जूट

फॉर लाइफ ये दोनों ही संस्थाएं महिलाओं के सेल्फ हेल्प ग्रुप के रूप में जूट से बनी चीजों के निर्माण में लगी हैं, जिसके उत्पाद अब प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रयोग में लाए जा रहे हैं। इनकी संस्था द्वारा लखनऊ जिले में लगभग 5000 महिलाओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है। अंजलि का कहना है, ''पुरुष प्रधान इस समाज में महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक बनाने के उद्देश्य से मैंने यह काम शुरू किया है।''

जूट व्यवसाय के माध्यम से अंजलि महिला उत्थान के सामाजिक दायित्वों को आगे बढ़ाने और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने की मुहिम में जुटी हुई हैं। इस स्तर पर पहुंच कर इन्होंने अपने कार्य को एक स्लोगन के माध्यम से व्यक्त किया है–*यू डिजायर, वी डिजाइन*। नीदरलैंड की संस्था 'वुमन ऑन विंग्स ग्रुप' ने उनके साथ हाथ मिलाया है। इसके माध्यम से ग्रामीण महिला वर्ग के आर्थिक एवं सामाजिक स्तर में सुधार के प्रयासों में सहयोग तथा भागीदारी किए जाने की योजना पर कार्य किया जा रहा है। इसे वर्ष 2021 तक पूरा किया जाना है।

अंजलि के कामों को देखते हुए अमेरिका के दूतावास पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम में उन्हें आमंत्रित किया गया। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। 'फिक्की लेडीज ऑर्गेनाइजेशन' ने इनके कार्य को स्तरीय बताने के साथ साथ-साथ इनकी संस्था को 'प्रेफर्ड वर्कप्लेस फॉर वुमन' के रूप में प्रमाणित किया है। इनके 'जूट फॉर लाइफ' के काम को साइबेरिया के जर्नल में प्रकाशित भी किया गया है।

अपनी कोशिशों और सकारात्मक सोच के साथ अंजलि ने जो स्थान हासिल किया है, वह केवल प्रशंसा के लायक ही नहीं, वरन अनुकरणीय भी है। उनके द्वारा नयी पीढ़ी के लिए स्पष्ट संदेश है–*यदि इरादे पक्के हों और नीयत साफ हो तो लक्ष्य को प्राप्त करना आसान है।* ◆ **आभा श्रीवास्तव**